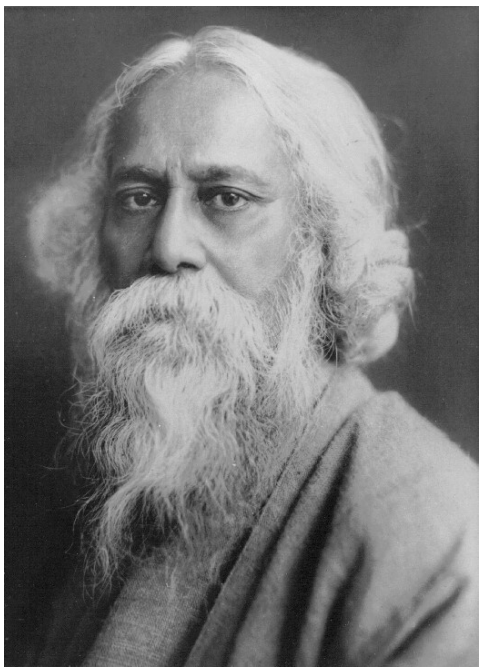

कवि गुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर

महाविद्यालय का अधिकृत गान

प्रार्थना

अन्तर मम विकसित कर
अन्तरतर हे !
निर्मल कर, उज्ज्वल कर
सुन्दर कर हे !
जागृत कर, उद्यत कर
निर्भय कर हे !
मंगल कर, निरलस
निःसंशय कर हे !
अंतर मम विकसित कर
अन्तरतर हे !
सबके संग कर युक्त
मुक्त कर बंधन !
संचारित कर सब कर्मों में
भर शान्त छन्द प्रतिक्षण !
चरण-पद्म में मम चित
निस्पन्दित कर हे !
नन्दित कर, नन्दित कर
नन्दित कर हे !
अन्तर मम विकसित कर
अन्तरतर हे !